दैनिक लोकदशा

दस्तख़त

जयपुर, रविवार, 7 अक्टूबर, 2012

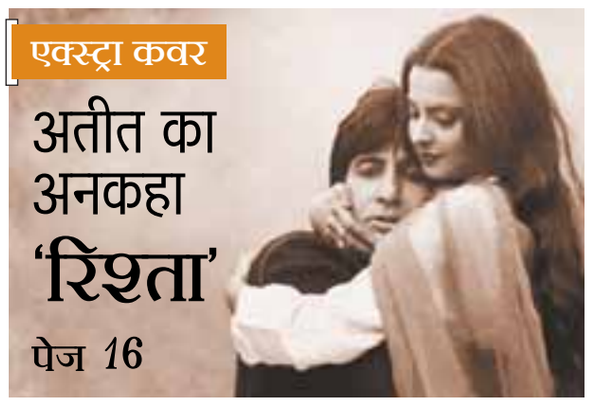

इंसान कैसे हो सकता है 'अछूत'

गुलामगीरी
महात्मा ज्योतिबा फुले

कितनी अजीब बात है! देश में आज भी यदा-कदा ऊंच-नीच की खबरें सार्वजनिक होती रहती हैं। इंसान से इंसान का फर्क आज भी जारी है, भले ही कम रूप में सही। बहुत सालों पहले समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले ने पुस्तक 'गुलामगीरी' के जरिए धर्म के नाम पर चल रहे पाखंड पर करारा व्यंग्य किया था। यह पुस्तक आज भी बेहद प्रासंगिक दिखलाई देती है। पेश है काल-खंड के बंधनों को तोड़ती इस महान पुस्तक के संपादित अंश :

खास बात

दक्षिण अफ्रीका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला साल 1990 में भारत यात्रा पर आए थे। उस दौरान महात्मा ज्योतिबा फुले की पुण्यतिथि के शताब्दी-महोत्सव पर मंडेला को फुले द्वारा साल 1873 में लिखी गई 'गुलामगीरी' का अंग्रेजी अनुवाद 'स्लेवरी' भेंट किया गया था।

सैकड़ों साल से शूद्रादि-अतिशूद्रों (अछूत) लगातार जुल्म और शोषण के शिकार हो रहे हैं। ये हर तरह की यातनाओं और कठिनाइयों में अपने दिन गुजार रहे हैं। इन लोगों को इन बातों की ओर ध्यान देना चाहिए और गंभीरता से सोचना चाहिए। ये लोग खुद को ब्राह्मण, पंडे और पुरोहितों की जुल्म-ज्यादतियों से कैसे मुक्त कर सकते हैं। कहा जाता है कि देश में ब्राह्मण-पुरोहितों की सत्ता कायम हुए लगभग तीन हजार साल से भी ज्यादा समय बीत गया होगा। वे लोग परदेश से यहां आए। उन्होंने इस देश के मूल निवासियों पर बर्बर हमले कर इन लोगों को अपना गुलाम (दास) बना लिया। ब्राह्मण-पुरोहितों और अन्य उच्च जातियों ने इन पर अपना वर्चस्व कायम करने के लिए, गुलाम बनाकर रखने के लिए, केवल अपने निजी हितों को ही मद्देनजर रखकर, एक से अधिक बनावटी ग्रंथों की रचना कर कामयाबी हासिल की। उन ग्रंथों में उन्होंने यह दिखाने की पूरी कोशिश की कि उन्हें जो विशेष अधिकार प्राप्त हैं, वे ईश्वर द्वारा प्रदत्त हैं। इस तरह का झूठा प्रचार उस समय के अनपढ़ लोगों में किया गया और अछूतों में मानसिक गुलामी के बीज बोए गए।

ऐसे बनावटी ग्रंथों के बारे में कोई सोचे कि यह बात कहां तक सही है, क्या वे सचमुच ईश्वर द्वारा प्रदत्त हैं तो उन्हें इसकी सच्चाई तुरंत समझ में आ जाएगी, लेकिन इस प्रकार के ग्रंथों से सर्वशक्तिमान, सृष्टि का निर्माता जो परमेश्वर है, उसकी समानत्ववादी दृष्टि को बड़ा गौणत्व प्राप्त हो गया है। इस तरह के हमारी उच्च जातियों के भाइयों ने किसी समय शूद्रादि-अतिशूद्रों को पूरी तरह से तबाह कर दिया था। वे ही लोग अब भी धर्म के नाम पर, धर्म की मदद से इनको चूस रहे हैं। एक भाई द्वारा दूसरे भाई पर जुल्म करना, यह भाई का धर्म नहीं है। फिर भी हमें, उन सभी को सृष्टि द्वारा उत्पन्न होने के रिश्ते से भाई कहना पड़ रहा है। वे भी खुले रूप से यह कहना छोड़ेंगे नहीं, फिर भी उन्हें केवल अपने स्वार्थ का ही ध्यान न रखते हुए न्यायबुद्धि से भी सोचना चाहिए। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो उन ग्रंथो को देख-पढ़कर बुद्धिमान अपना यह मत दिए बिना नहीं रहेंगे कि उन ग्रंथो को केवल अपने मतलब के लिए लिखा गया है। उन ग्रंथों द्वारा उच्च जातियों ने ईश्वर के वैभव को कितनी निम्न स्थिति में ला रखा है, यह सही में बड़ा शोचनीय है। जिस ईश्वर ने अछूतों को और अन्य लोगों को अपने द्वारा निर्मित इस सृष्टि की सभी वस्तुओं को समान रूप से उपभोग करने की पूरी आजादी दी है, उस ईश्वर के नाम पर एकदम झूठ-मूठ ग्रंथों की रचना कर, उनमें सभी के (मानवीय) हक को नकारते हुए स्वयं मालिक हो गए।

इस बात पर हमारे कुछ ब्राह्मण भाई इस तरह प्रश्न उठा सकते हैं कि यदि ये तमाम ग्रंथ झूठ-मूठ के हैं तो उन ग्रंथों पर अछूतों के पूर्वजों ने क्यों आस्था रखी थी? और आज इनमें से बहुत सारे लोग क्यों आस्था रखे हुए हैं? इसका जवाब यह है कि आज के इस प्रगति काल में कोई किसी पर जुल्म नहीं कर सकता। मतलब, अपनी बात को लाद नहीं सकता। आज सभी को अपने मन की बात, अपने अनुभव की बात स्पष्ट रूप से लिखने या बोलने की छूट है।

कोई धूर्त आदमी किसी बड़े व्यक्ति के नाम से झूठा पत्र लिखकर लाए तो कुछ समय के लिए उस पर भरोसा करना ही पड़ता है। बाद में समय के अनुसार वह झूठ उजागर हो ही जाता है। इसी तरह शुद्रादि-अतिशूद्रों का, किसी समय ब्राह्मण-पंडा-पुरोहितों के जुल्म और ज्यादतियों के शिकार होने की वजह से, अनपढ़-गंवार बनाकर रखने की वजह से, पतन हुआ है। ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के नाम पर झूठे-पांखडी ग्रंथों की रचना कर शूद्रादि-अतिशूद्रों को गुमराह किया है।

ऐसे लोग अपना पेट पालने के लिए, अपने पाखंडी ग्रंथों द्वारा, जगह-जगह बार-बार अज्ञानी शूद्रों को उपदेश देते रहे, जिसकी वजह से उनके दिलों-दिमाग में ब्राह्मणों के प्रति पूज्यबुद्धि उत्पन्न होती रही। अछूत लोगों के मन में ईश्वर के प्रति जो धारणा है, वही धारणा अपने को (ब्राह्मणों को) समर्पित करने के लिए मजबूर किया। यह कोई साधारण या मामूली अन्याय नहीं है। इसके लिए उन्हें ईश्वर को जवाब देना होगा। ब्राह्मणों के उपदेशों का प्रभाव अधिकांश अज्ञानी शूद्र लोगों के दिलो-दिमाग पर इस तरह से जड़ जमाए हुए है कि अमेरिका के (काले) गुलामों की तरह जिन दुष्ट लोगों ने हमें गुलाम बनाकर रखा है, उनसे लड़कर आजाद होने की बजाय जो हमें आजादी दे रहे हैं, उन लोगों के विरुद्ध फिजूल कमर कसकर लड़ने के लिए तैयार हुए हैं। यह भी एक बड़े आश्चर्य की बात है कि हम लोगों पर जो कोई उपकार कर रहे हैं, उनसे कहना कि हम पर उपकार मत करो, फिलहाल हम जिस स्थिति में हैं वही स्थिति ठीक है, यही कहकर हम शांत नहीं होते बल्कि उनसे झगड़ने के लिए भी तैयार रहते हैं, यह गलत है। वास्तव में हमें गुलामी से मुक्त करने वाले जो लोग हैं, उनको हमें आजाद कराने से कुछ हित होता है, ऐसा भी नहीं है, बल्कि उन्हें अपने ही लोगों में से सैकड़ों लोगों की बलि चढ़ानी पड़ती है। उन्हें बड़ी-बड़ी जोखिमें उठाकर अपनी जान पर भी खतरा झेलना पड़ता है।

अब उनका इस तरह से दूसरों के हितों का रक्षण करने के लिए अगुवाई करने का उद्देश्य क्या होना चाहिए, यदि इस सम्बंध में हमने गहराई से सोचा तो हमारी समझ में आएगा कि हर मनुष्य को आजाद होना चाहिए, यही उसकी बुनियादी जरूरत है। जब व्यक्ति आजाद होता है, तब उसे अपने मन के भावों-विचारों को स्पष्ट रूप से दूसरों के सामने प्रकट करने का मौका मिलता है। पर जब उसे आजादी नहीं होती, तब वह वही महत्वपूर्ण विचार जनहित में होने के बावजूद दूसरों के सामने प्रकट नहीं कर पाता और समय गुजर जाने के बाद वे सभी लुप्त हो जाते हैं। आजाद होने से मनुष्य अपने सभी मानवीय अधिकार प्राप्त कर लेता है और असीम आनंद का अनुभव करता है। सभी मनुष्यों को मनुष्य होने के जो सामान्य अधिकार परमेश्वर द्वारा दिए गए हैं, उन तमाम अधिकारों को वर्ग विशेष ने दबोच रखा है। अब ऐसे लोगों से अपने अधिकार छीनकर लेने में कोई कसर बाकी नहीं रखनी चाहिए। अंग्रेजों ने देश में अछूतों को उनके हक दिलाने में अहम कोशिशें की हैं। सभी को आजादी देकर, उन्हें जुल्मी लोगों के जुल्म से मुक्त कर सुखी बनाना, यही अंग्रेजों का इस तरह से खतरा मोल लेने का उद्देश्य है।

दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका जैसे पृथ्वी के इन दो बड़े हिस्सों में सैकड़ों साल से अन्य देशों से लोगों को पकड़-पकड़कर यहां उन्हें गुलाम बनाया जाता था। यह दासों को खरीदने-बेचने की प्रथा यूरोप और तमाम प्रगतिशील कहलाने वाले राष्ट्रों के लिए बड़ी लज्जा की बात थी। उस कलंक को दूर करने के लिए अंग्रेज, अमेरिकी आदि उदार लोगों ने गुलामों की मुक्ति के लिए प्रयास किए। यह गुलामी प्रथा कई सालों से चली आ रही थी। इस अमानवीय गुलामी प्रथा को समूल नष्ट कर देने के लिए असंख्य गुलामों को उनके परमप्रिय माता-पिता से, भाई-बहनों से, बीवी-बच्चों से, दोस्त-मित्रों से जुदा कर देने की वजह से जो यातनाएं सहनी पड़ीं, उससे उन्हें मुक्त करने के लिए उन्होंने संघर्ष किया। उन्होंने जो गुलाम एक-दूसरे से जुदा कर दिए गए थे, उन्हें एक-दूसरे के साथ मिला दिया। यदि आज उन्हें इन गरीब अनाथ गुलामों की बदतर स्थिति देखकर दया न आई होती तो ये गरीब बेचारे अपने प्रियजनों से मिलने की इच्छा मन में ही रखकर मर गए होते।

दूसरी बात, उन गुलामों को पकड़कर लाने वाले दुष्ट लोग उन्हें क्या अच्छी तरह रखते भी या नहीं? नहीं, नहीं! उन गुलामों पर वे लोग जिस प्रकार से जुल्म ढाते थे, उनकी कहानी सुनते ही पत्थरदिल आदमी की आंखें भी रोने लगेंगी। वे लोग उन गुलामों को जानवर समझकर उनसे हमेशा लात-जूतों से काम लेते थे। वे लोग उन्हें कभी-कभी लहलहाती धूप में हल जुतवाकर उनसे अपनी जमीन जोत-बो लेते थे। इस काम में यदि उन्होंने थोड़ी सी भी आनाकानी की तो उनके बदन पर बैलों की तरह छांटे से घाव उतार देते थे। इतना होने पर भी क्या वे उनके खान-पान की अच्छी व्यवस्था करते होंगे? इस बारे में तो कहना ही क्या! उन्हें केवल एक समय का खाना मिलता था। दूसरे समय कुछ भी नहीं। उन्हें जो भी खाना मिलता था, वह भी बहुत ही थोड़ा-सा। इसकी वजह से उन्हें हमेशा आधे भूखे पेट ही रहना पड़ता था, लेकिन उनसे छाती चूर-चूर होने तक, मुंह से खून फेंकने तक दिनभर काम करवाया जाता था। रात को उन्हें जानवरों के कोठे में या इस तरह की गंदी जगहों में सोने के लिए छोड़ दिया जाता था, जहां थककर आने के बाद वे गरीब बेचारे उस पथरीली जमीन पर मुर्दों की तरह सो जाते थे, लेकिन आंखों में पर्याप्त नींद कहां से होगी? बेचारों को आखिर नींद आएगी भी कहां से? इसमें पहली बात तो यह थी कि पता नहीं मालिक को किस समय उनकी गरज पड़ जाए और बुलावा आ जाए, इस बात का उनको जबर्दस्त डर लगा रहता था। दूसरी बात यह थी कि पेट में पर्याप्त मात्रा में भोजन नहीं होने की वजह से जी घबराता था और पैर लड़खड़ाने लगते थे। तीसरी बात यह थी कि दिनभर बदन पर छांटे के वार बरसते रहने से सारा बदन लहूलुहान हो जाता और उसकी यातनाएं इतनी जबर्दस्त होती थीं कि पानी में मछली की तरह रातभर तड़फड़ाते हुए एक करवट पर सोना पड़ता था। चौथी बात यह थी कि अपने लोग पास न होने की वजह से उस बात का दर्द तो और भी भयंकर था।

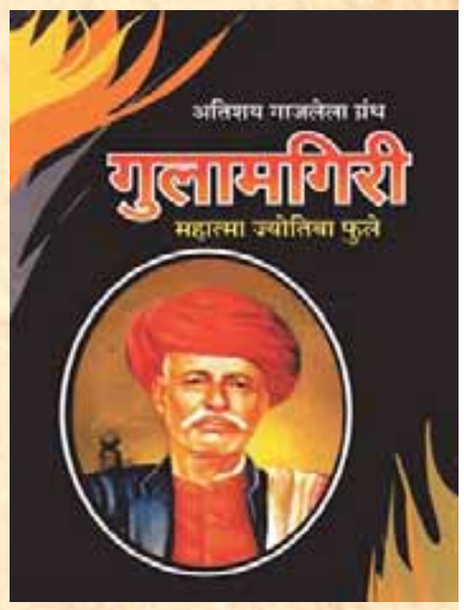

इस तरह बातें मन में आने से यातनाओं के ढेर खड़े हो जाते थे और आंखें रोने लगती थीं। वे बेचारे भगवान से दुआ मांगते थे, हे भगवान! अब भी तुझको हम पर दया नहीं आती! तू अब हम पर रहम कर। अब हम इन यातनाओं को बर्दाश्त करने के भी काबिल नहीं रहे हैं। अब हमारी जान भी निकल जाए तो अच्छा ही होगा।... इस तरह की यातनाएं सहते-सहते, इस तरह से सोचते-सोचते ही सारी रात गुजर जाती थी। उन लोगों को जिस-जिस प्रकार की पीड़ाओं, यातनाओं को सहना पड़ा, उनको यदि एक-एक कर कहा जाए तो भाषा और साहित्य के शोक-रस के शब्द भी फीके पड़ जाएंगे।

अमेरिका ने सैंकड़ों साल से चली आ रही गुलामी की अमानवीय परम्परा को समाप्त कर गरीब लोगों को उन चंड लोगों के जुल्म से मुक्त कर उन्हें सुख की जिंदगी बख्शी है। इन बातों को जानकर शूद्रादि-अतिशूद्रों को अन्य लोगों की तुलना में बहुत ही ज्यादा खुशी होगी, क्योंकि गुलामी की अवस्था में गुलाम लोगों को, गुलाम जातियों को कितनी यातनाएं बर्दाश्त करनी पड़ती हैं, इसे स्वयं अनुभव किए बिना अंदाज करना नामुमकिन है। जो सहता है, वही जानता है। अब उन गुलामों में और इन गुलामों में फर्क इतना ही होगा कि पहले प्रकार के गुलामों को ब्राह्मण-पुरोहितों ने अपने बर्बर हमलों से पराजित कर गुलाम बनाया था और दूसरे प्रकार के गुलामों को दुष्ट लोगों ने एकाएक जुल्म कर गुलाम बनाया था। शेष बातों में उनकी स्थिति समान है। उनकी स्थिति और गुलामों की स्थिति में बहुत फर्क नहीं है।

उनमें से अधिकतर लोगों को इन लोगों को इतना निम्न समझा था कि किसी समय कोई शूद्र नदी के किनारे अपने कपड़े धो रहा हो और इत्तेफाक से वहां यदि कोई ब्राह्मण आ जाए तो उस शूद्र को अपने सभी कपड़े समेटकर बहुत दूर जाकर अपने कपड़े धोने पड़ते थे। यदि वहां से ब्राह्मण के तन पर पानी की बूंद का एक कतरा भी छू गया या उसको इस तरह का संदेह भी हुआ तो ब्राह्मण-पंडे आग के शोले की तरह लाल हो जाते थे। इस तरह की बातों पर यदि सरकार में शिकायत करो तो खतरा यह रहता था कि खुद को ही सजा भोगने का मौका न आ जाए। अफसोस! हे भगवान, यह कितना बड़ा अन्याय है! असल में, होना यह चाहिए कि हमें सभी जनों के प्रति समानता का भाव रखना चाहिए और उन तमाम बातों की ओर ध्यान देना चाहिए, जिससे अछूत समाज मानसिक गुलामी से मुक्त हो सके।